सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• प्रतिभा श्रीवास्तव 'अंश'

सृजक-सृजन-समीक्षा

प्रतिभा श्रीवास्तव 'अंश'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

प्रतिभा श्रीवास्तव 'अंश' का परिचय

नाम-प्रतिभा श्रीवास्तव अंश

माता का नाम-गीता देवी

पिता का नाम-स्व.सुखनंदन प्रसाद

पति का नाम - अनुज कुमार श्रीवास्तव

जन्मतिथि-01/03/1980, छपरा,बिहार

शिक्षा-एम.ए. हिंदी,पी.जी. इन कंप्यूटर

कार्यक्षेत्र -गैर सरकारी काम

सामाजिक कार्यक्षेत्र-निर्धन बच्चों को कंप्यूटर के शिक्षा देना

विधा-कविता,कहानी,लधुकथा,आलेख

ईमेल-pratibha_shr@yahoo.com

मो. 9976588010

प्रकाशन_भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में कविता व आलेख का प्रकाशन

सम्मान-शब्द शक्ति सम्मान,हिंदी सेवी सम्मान,पूर्वोत्तर वार्ता में सम्मानित होना।

उप्लब्धियाँ-भोपाल आकाशवाणी में बालसाहित्य कविताओं का प्रसारण

आत्मकथ्य

मैं अपनी भावनाओं और आस-पास की पीड़ाओं को कविता,कहानी में ढाल कर समाज को दिशा निर्देश व जागरूक बनाना चाहती हूं,अगर मेरी रचना से किसी एक भी व्यक्ति को भी सही राह मिलेगी,तो उस दिन मेरे लिखने का उदेश्य पूरा हो जायेगा।

प्रतिभा श्रीवास्तव अंश

"सृजक का सृजन"

अम्मा

कोशिश करती हर बार,
अम्मा तुझसे लिपटकर,
ना रोऊँगी इस बार.....
जब भी विदा होती ,
अम्मा तेरी देहरी से,
बाबूजी का चुपके से,
नजरों से ओझल हो जाना,
जाने कितनी अनकही बातें,
जो हुई नही अभी बाबुल से,
शून्य को निहारती,
एहसासों को समझाती,
भारी मन से अम्मा,
मैं पीहर से विदाई लेती हूं।
ससुराल में नही दुख का साया,
राजमहल में तुम ने ब्याहा है।
लेकिन मैं तो पीहर कि,
सोनचिरैया कहलाती थी,
आज तुम्हारी सोनचिरैया,
सोने के महल में रहती है,
फिर भी इस चिरैया को,
माटी से ही माया हैं,।
अम्मा तेरे चौखट की माटी,
मुझको नही भुलाती है।
बहुत कोशिस करती हूं,
तुझ से लिपटकर ना रोऊँगी,
पर तुझ से लिपटकर रोना
अम्मा, चित्त को शांति देता है।

मुझे ठण्ड नही लगती

मुझे ठण्ड नही लगती,
जब देखती निर्धन उन लोगो को,
जो पेट की आग बुझाने को,
भूल जाते हर मौसम को।

गर्म रजाईयां भी नही सुलाती मुझे,
जब देख कर आती चंद लोगो को,
जो वस्त्र विहीन भी सोते चैन से।
क्यों व्याकुल मन ये मेरा होता,

देख के इन तकलीफो को,
जाने क्यूँ अब ठण्ड नही लगती,
ठण्ड के इन थपेड़ो से।

मैं सुमन हरि चरणों की

मैं सुमन हरि चरणों की।
पावन और पवित्र मैं रहती ।
हर्षित होती किस्मत पर अपनी
जो स्थान मिला श्री चरणों में ।।

मैंने अपने साथी फूलों को,
माला बनते देखा है,
शोभा बढ़ जाती फिर उनकी ,
डल जाते जब हरि गले में,

पुलकित होते रहते वो,
अपनी किस्मत पर इतराकर।।
हम फूल एक ही बगिया के ,
फिर ये असमानता क्यों बीच
हमारे?

मैंने आखिर पूछ लिया
विरजमान थे जो श्री गले में ,
क्यों? तुम्हे शीर्ष और मुझे चरण
कारण बताओ ओ मेरे मित्र।।

मुस्कुराता हुआ मित्र फिर बोला
मैंने सही सुइयों की चुभन
नहीं की कभी कोई शिकायत,
मेरे बाद आया उसको भी दिया
आगे स्थान ,

बाते उसके मुख से सुनके ,
लज्जित हुई सोच पे अपनी
जा गिर श्री के चरणों में
पश्चाताप करने की खातिर ।।

मैं सुमन हरि चरणों की ।

अन्याय से लड़ते-लड़ते

अन्याय से लड़ते-लड़ते मैं
खुद से अन्याय कर बैठी ,
खुश हो मेरा सारा जहां
मैं दुःख के अंधरे में खो गई ,

मैं खोई अंधरो में इस कदर की ,
सही -गलत को भूल गई.
न्याय के लिए लड़ते-लड़ते मैं,
अन्याय की साथी बन बैठी,

कौन अपना कौन पराया
सब की लाठी बन बैठी
ऐसी मैंने लड़ी लड़ाई,
कि खुद से लडना भूल गई ।

हू अशांत मैं फिर भी
शांत भले दिखती हूँ ,
कैसी विडंबना मेरी ये
मैं खुद से नहीं लड़ पाती हूँ

अन्याय से लड़ते-लड़ते मैं
खुद से अन्याय कर बैठी ,

तेरा मेरा साथ

जब से मेरे पिता ने,
मेरा हाथ दिया तेरे हाथो में,
उसी क्षण से प्रिये,
तेरे साथ खड़ी हूँ।
तेरे हर फैसले में,
साथ रहूँगी,
तेरे हर कदम में ,
साथ रहूगी।
तू पायेगा मुझे
पास अपने,
हर पल ,हर क्षण।

पर उस वक्त ,
जब मौत आएगी,
बीच हमारे,
तो वेवफाई,
करनी होगी मुझे,
क्षमा कर देना उस वक्त मुझको,
जब तुझे छोड़ मैं उसका ,
वरण कर जाऊँगी।

आधारशिला

मेरे पति तुम मेरे प्रियवर
आधारशिला तुम जीवन के

कल तक बाबा के आँगन में
घर-घर खेला करती थी
वो घर, वो सपनो का जीवन
डाला तू ने झोली में
मेरे पति मेरे प्रियवर
आधार तुम्ही से जीवन का

आयी जब जीवन में तेरे
मुझको कई आयाम मिले
मान मिला ,सम्मान मिला
मातृत्व का अभिमान मिला

मेरे पति मेरे प्रियवर
आधार तुम्ही से जीवन का

आयेगी जब साझ जीवन की
बैठेंगे हम दोनों मिलकर
कुछ खट्टी कुछ मीठी बाते
साझा करेंगें दोनों मिल के
मेरे पति मेरे प्रियवर
आधार तुम्ही से जीवन का

सुनो प्रियवर तुम मेरी बाते
जो मैं कभी न कह पायी
एक-एक करके सब दूर हुए पर
तुम दूर न होना जीवन से

मेरे पति तुम मेरे प्रियवर
आधार तुम्ही से जीवन का

जीवन के इस अग्नि पथ पे
छोड न जाना मुझको प्रियवर
विरह के ज्वाला में जलके
फिर तुझसे मिलने आऊँगी
मेरे पति तुम मेरे प्रियवर
आधार तुम्ही से जीवन का,..

नियति

देखों जरा हथेली अपनी,
उसमें हल्की सी
लकीर हमारी भी ...।।
मत होना परेशान कभी,
मेरी किस्मत की लकीरों में
नाम तुम्हारा शामिल है.......
देखों जरा हथेली अपनी,
उस में बसी तकदीर हमारी।।
मिलना- बिछड़ना खोना पाना,
यह खेल बेशक नियति का,
इसी नियति में चुना तुझको ,
देखो मेरी किस्मत में ।।
कितनी भी हम कोशिश कर ले,
जिंदगी के आशियाने में ,
पर नियति के हर फैसले को,
स्वीकार करना पड़ता है।
इसी नियति ने चुना ,
तुझको मेरी किस्मत में।

सम्बन्धो का अनुबंध

सम्बन्धों के अनुबंध पर,
सिर्फ मेंरे हस्ताक्षर क्यो?
हम दोनों के बंधन से,
बना हमारा सम्बन्ध ,
लेकिन इस सम्बन्ध पत्र पर,
सिर्फ मेरे हस्ताक्षर क्यो?
सारे प्रपत्र तैयार मैं करती,
फिरभी तुम्हारे मुहर बिना,
मूल्यविहीन अनुबन्ध हमारा,
हमारे इन अनुबन्धों पर,
सिर्फ मेरे हस्ताक्षर है।
जिसके अंतिम फैसले पर,
मुहर लगा तुम आगे बढ़ते।

सृजन की समीक्षा

1.

बेहतरीन लेखनी के लिए प्रतिभाजी अभिनंदन **अम्मा**,

आधारशिला, मुझे ठंड नही लगती, बेमिसाल कृतियां । अम्मा मुझे मेरे बेहद दिल के करीब लगी, शुभकामनाए आपको और अम्मा जैसे प्यारी रचना के लिए बधाई,लेखनी अग्रसर होती रहें यही दिल से शुभकामनाए ।

सुरेखा अग्रवाल 'स्वरा'

2.

आ0 प्रतिभा जी ,केंद्रीय रचनाकारा के रूप में आपका हार्दिक स्वागत एवं **बधाई** ।

छोटे से आत्मकथ्य में बात आपने गहरी कह दी , हर रचनाकार का उद्देश्य भी यही होना चाहिये कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ही सही किसी रचना से पाठक को कोई दिशा ज्ञान मिलता है तो समझो सृजन वहीं सफल हो गया ।

आपकी पहली रचना **अम्मा** आपकी प्रतिनिधि रचना सा स्थान बनाकर आपकी सृजनशक्ति की परिचायक बनती है । आपकी यह रचना हर माँ, बेटी,भाई एवं पिता के हृदय को स्पर्श करती है मतलब यही कि हर पाठक के ।

आपकी रचना **मुझे ठंड नहीं लगती** सृजक मन का दर्पण है । हृदय में परोपकार एवं परहित के भाव नहीं हैं तो रचना मर्म को छू नहीं पायेगी । आपके दयालु मन और चिंता के वास्तविक भाव रचना को प्रभावी बनाते हैं ।

तेरा मेरा साथ और **आधारशिला** हमसफ़र के साथ रिश्तों की खूबसूरत अभिव्यक्ति । **नियति** के हर फैसले को स्वीकार करना पड़ता है बढ़िया रचना।

संबंधों का अनुबन्ध सुंदर भाव एवं शब्द शिल्प । अनुबन्ध हमेशा दो पक्षों के मध्य होता है दोनों के ही हस्ताक्षर , मोहर आवश्यक होती है । सुंदर अभिव्यक्ति । आपका सृजन अभी और परिपक्वता की ओर बढ़ रहा है भविष्य में उत्कृष्ट रचनाएँ आपकी कलम से निकलेगी ।

आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ पुनः **बधाई** ।

हेमंत बोर्डिया

3.

यथा नाम तथा गुण। प्रतिभा श्रीवास्तव जी का हार्दिक स्वागत है सृजक सृजन समीक्षा विशेषांक में। परिचय, कार्यक्षेत्र, विधा, प्रकाशन, सम्मान, उपलब्धियाँ बता रही हैं कि आप कितनी प्रतिभाशाली हैं। **अम्मा**, पीहर की सोनचिरैया बनकर बहुत सुन्दर रचना रची है। **मुझे ठण्ड नहीं लगती**, दिल को छू लेने वाली रचना, **मैं सुमन हरि चरणों की**, अपनी सोच में पश्चाताप के भावों का आना , सुन्दर शब्दों के संयोजन से कविता बनाना आपको विशिष्ट बना रहा है। **अन्याय से लड़ते लड़ते** लाजवाब सृजन, **तेरा मेरा साथ**, शानदार अतुकान्त रचना, **आधारशिला**, पति को परमेश्वर के तुल्य मानकर रची गई बेहतरीन अभिव्यक्ति। **नियति**, लाजवाब सृजन, **सम्बन्धों का अनुबंध**, खूबसूरत रचना। आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ, मंगलकामनाएँ। -

पिंकी परुथी "अनामिका"

4.

आदरणीया प्रतिभा जी

सादर नमस्कार

बहुत **बधाई** आप को कि आप केंद्रीय रचनाकार है। और आज हमें आप की रचनाओं को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

आप का छोटा सा परंतु सारगर्भित परिचय पढ़ा,और रचनाओं को पढ़ा इतना जरूर महसूस कर पा रहा हूँ कि आप बहुत ही सहज, सरल जीवन और लेखन मैं विश्वास रखती है, भावनात्मक लेखन कहीं न कहीं दिल को छू कर जाता है। ये भी बहुत बड़ी और अच्छी साथ में उल्लेखनीय बात है कि आप अपने साहित्य के माध्यम से समाज सेवा देश सेवा करना चाहती है, उद्देश्यपूर्ण रचनाएँ लिखने की ख्वाहिश रखती है।

अम्मा,,मुझे ठंड नहीं लगी,,,और तेरा मेरा साथ,,,बहुत अच्छी रचनाएँ है,,भावनात्मक पहलू के करीब रचना,,मन की बाते है जैसे,,बस मुझे ठंड नही लगती और तेरा मेरा साथ में थोड़ी से लंबाई और होती और साथ मे कसावट तो ये दोनों रचनाएँ मोती की तरह और निखर सकती है

मैं सुमन हरि चरणों की और अन्याय से लड़ते लड़ते,, दोनों मुझे बहुत पसंद आई,,दोनों रचनाओ के लिए **बधाई**,

आधारशीला और सम्बन्धों का अनुबंध,,व्वाह व्वाह व्वाह,,लाजवाब है दोनों और सब से खूबसूरत बात कि दोनों का विपरीत भाव पक्ष है जो ये दर्शाता है कि आप के विचार और लेखनी में विविधता है।

नियति,,बढ़िया रचना है बस थोड़ी और स्पष्ट होनी चाहिए थी।

आप को पुनः बधाइयाँ और आप के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ और पार्थना करता हूँ कि आप साहित्य में अपनी लेखन ज्योति और जगमग करती रहे। धन्यवाद,..

शीतल खंडेलवाल

5.

स्वागत , वन्दन और अभिनन्दन

प्रतिभा जी को समग्र रूप से पढ़ना , मिट्टी की सौंधी गन्ध से होकर गुज़रना है जैसे । उनके भीतर का साहित्य कार,सामाजिक सरोकारों से जुड़ा है तो वही बारम्बार परिलक्षित है ।

अम्मा चिर प्रेम की वही शाश्वत कहानी है ,जो माँ और बेटी की दरमियाँ, पीढ़ी दर पीढ़ी कही जाती रही है ।

मुझे ठण्ड नही लगती:- सामाजिक विषमताओं से वाबस्ता खूबसूरत कथ्य

हरि चरणों का पुष्प हो जाना:- एक भक्त की ,अन्तस् को उंडेलती खूबसूरत वन्दना है।

अन्याय से लड़ते 2:- खुद के मुब्तिला हो कर,उलझ जाने का अंतर्द्वन्द खुद के प्रति अन्याय के रूप में परिलक्षित होता है ।

खुद से लड़ना और खुद के प्रति अन्याय विरोधाभासी सी बात लगी मुझे ।

तेरा मेरा साथ:- और **आधारशिला**:-

सम्बन्धों का अनुबन्ध प्रेम के माधुर्य, दाम्पत्य में समर्पण और विश्वास का दस्तावेज़ है, और प्राचीन मूल्यों को सहेजती, परिपोषित करती रचनाएँ, पुरुष के वर्चस्व पर एक प्रश्नचिन्ह सहज ही जड़ देती हैं ।

नियति :-में सच कहूँ तो मुझे कुछ समझ नही आया
क्या रंग उकेरना चाहती है साधिका??

शानदार सृजन के लिए साधुवाद , पथ जगमग हो । जय हो ,विजय हो ।

ब्रजेश शर्मा विफल, झाँसी

6.

प्रतिभा जी, अन्तरा पटल पर आपका **अभिनंदन** है|
कैन्द्रिय रचनाकार होना मतलब साफ तौर पर सबसे जुड़ जाने का सशक्त माध्यम है| भावनाओं को प्रधानता देती रचनाओं का सौन्दर्य निश्चित तौर पर प्रगाढ़ है| समाज को जागरुक करने के भावों को पल्लवित कर रचनाओं में स्थान देना अभुतपूर्व है|
आपकी रचना अम्मा, मुझे ठण्ड नहीं लगती, मैं सुमन हरि चरणों की, अन्याय से लड़ते-लड़ते, तेरा मेरा साथ, आधारशीला, नियति और संबंधो का अनुबंध बेहतरीन है|
इनके अतिरिक्त भी पटल पर विषयों में आपके लेखन को पढ़ते रहते हैं| साहित्य पटल पर आप का लेखन दैदीप्तमान हो, यही कामना है|

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com